International Journal on Science and Technology (IJSAT)
E-ISSN: 2229-7677 ● Website: www.ijsat.org ● Email: editor@ijsat.org

हिंदी कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना

बिंदु कुमारी, शोधार्थी[1], डॉ रितु शर्मा[2]

[1]शोध निर्देशक, [2]सहायक प्रोफेसर

[1]कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर।

[2]कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, निर्वाण यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

हिंदी कथा साहित्य, विशेष रूप से कहानी और उपन्यास; समाज के बदलते परिवेश, जीवन की जटिलताओं और मानवीय संवेदनाओं का प्रतिबिंब है। बीसवीं शताब्दी के मध्य से लेकर आज तक, हिंदी साहित्य में जिस चेतना ने सबसे अधिक प्रभाव डाला है, वह है - मध्यवर्गीय चेतना। यह चेतना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक स्तर पर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो न केवल मध्यवर्ग की जटिलताओं को उभारती है, बल्कि समकालीन समाज की सच्चाइयों को भी उजागर करती है। हिंदी कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना एक गतिशील और सशक्त प्रवृत्ति के रूप में उभरी है। यह चेतना समाज के उस वर्ग की आवाज़ बन गई है जो न तो पूर्णतः शोषित है, न ही प्रभुत्वशाली – परंतु जो संघर्षशील, मूल्यनिष्ठ और परिवर्तनशील है। मध्यवर्गीय चेतना आज के समय में भी, मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं और द्वंद्वों को समझने के लिए हिंदी कथा साहित्य का एक प्रभावशाली साधन बना हुआ है।

मूल शब्द : मध्य वर्ग, मध्यवर्गीय चेतना, समकालीन समाज, सामाजिक यथार्थ,

शोध आलेख

मध्यवर्गीय चेतना की अवधारणा

मध्यवर्ग की अवधारणा यूरोपीय है। भारत में वर्ग की नहीं बल्कि वर्ण और जाति की अवधारणा रही है। भारत में वर्ग की यह अवधारणा यूरोप से आई है। ऐतिहासिक रूप से बुर्जुआ वर्ग ही बाद में मध्य वर्ग कहलाया। बुर्जआ पद सबसे पहले मध्यकालीन फ्रांस के उन निवासियों के लिए प्रयोग में आया था जो समाज में किसानों और जमीन पर आधिपत्य जमा रखने वाले कुलीनों के मध्य स्थित था। क्लाउड अल्वेयर ने अपनी किताब 'होमो फेबर' में मध्य वर्ग को व्यापक संदर्भ में देखने की कोशिश की है और उसी क्रम में मध्य वर्ग के जन्म के ठोस कारणों को सामने रखा है। वे अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि 16वीं शताब्दी के मध्य में तीसरी बार जनसंख्या में बढ़ोतरी दर्ज की गई। जिसका एक परिणाम अनाज और जमीन की कीमतों में वृद्धि के रूप में सामने आया। इसका मतलब यह कि जिनके पास जमीनें थीं, और जो जमीन खरीद सकते थे वह समृद्ध हो गए और दूसरे बाकी बचे लोग काफी गरीब हो गए। जनसंख्या का यह गरीब तबका जिनका जीवन भूमि से जुड़ा था, किसी भी तरह के काम की तलाश में विकासशील शहरी केन्द्रों की ओर उन्मुख हुआ। जड़ से उजड़े हुए इन भूमि विहीन मजदूरों ने शहरी क्षेत्र के मजदूरों की परेशानियां बढ़ा दी । इसका नतीजा यह हुआ कि अतिरिक्त श्रम की उपलब्धता से मजदूरी में काफी कमी आई।

इस जड़ विहीन वर्ग का संघर्ष कठिन था। इस वर्ग ने जीने के लिए खेती और कारीगरी सहित तरह तरह के पेशे में हाथ आजमाए। इन्हीं में से कुछ अपने उद्यम के बल पर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सके। इन्होंने नए काम करने का जोखिम उठाया और सफलता हासिल की। शहरों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही थी। और ज़मीन पर आधिपत्य रखने वाला भू स्वामी सामंत कृषि के लिए भूमि का उपयोग कर रहे थे। अपने उद्यम के बल पर विकसित हुआ और नया नया अस्तित्व में आया तबका (बुर्जुआ वर्ग) ही बाद में मध्यवर्ग कहलाया।

भारत में मध्यवर्ग का उदय

भारत में मध्यवर्ग का व्यवस्थित उदय अंग्रेजी साम्राज्य के फलस्वरूप हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में यह वर्ग दिखने लगा था। मध्यवर्ग का उदय इस देश में उस समय दिखाई देने लगा था जब अंग्रेजी शासन व्यवस्था अपनी जड़ें जमाने की फिराक में था। अंग्रेजों ने अपनी शासन व्यवस्था को सही ढंग से चलाने के लिए भारतीय समाज से कुछ ऐसे विचौलियों को चुन लिया था जो उनकी व्यवस्था को सुविधा मुहैया करायें तथा पारिश्रमिक के रूप में कुछ लेकर संतोष करें। भारतीय समाज में मध्यवर्गीय समुदाय का जो स्वरूप आज देखने को मिल रहा है वह अंग्रेजों के आगमन पूर्व इस देश में नहीं था | समाज की संरचना से हम इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं कि शासक वर्ग के नजदीक समाज का एक ऐसा वर्ग हर समय रहता है जो समाज के सामान्य व्यक्तियों एवं प्रशासन के बीच तालमेल स्थापित करने में अहम भूमिका निभाता है। ऐसे लोगों को मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति कहा जा सकता है।

यह वर्ग उच्चवर्ग और निम्न वर्ग के बीच का होता है। इस वर्ग की अभिलाषाएँ उच्चवर्ग के समान होती है। इसी कारण यह वर्ग हर समय अर्थाभाव झेलता रहता है। आज प्राय: यह देखा जा रहा है कि अर्थाभाव के कारण यह वर्ग समाज के नैतिक आदर्श को खोता चला जा रहा है इसलिये इस वर्ग की सामाजिक नैतिकता भी दाव पर लगी दिखती है। मध्यवर्ग केवल आर्थिक वर्ग नहीं है, बल्कि यह एक मानसिकता है जो परंपराओं से बंधी हुई होने के साथ-साथ आधुनिकता की ओर आकृष्ट भी है। यह वर्ग रोज़मर्रा की आवश्यकताओं, मानवीय संबंधों, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के बीच झूलता रहता है।

मध्यवर्गीय चेतना के प्रमुख तत्व :

1. आर्थिक सुरक्षा और आकांक्षा: मध्यवर्ग आर्थिक असुरक्षा की भावना से अक्सर ग्रस्त रहता है। इसलिए उसकी कोशिश उस असुरक्षा से लड़ने की होती है। इसके अलावा मध्यवर्ग महत्वाकांक्षी भी होता है।
2. सामाजिक प्रतिष्ठा की चाह: मध्य वर्ग, सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए हर संभव कोशिश करता है। इसीलिए इनमें दिखावे की प्रवृत्ति भी पायी जाती है।
3. संस्कार और परपंरा बनाम आधुनिकता: मध्यवर्गीय चेतना एक ओर परंपराओं और मूल्यों को बनाए रखने पर ज़ोर देती है। वहीं दूसरी ओर आधुनिकता की भी पक्षधर होती है। यह अक्सर दो विरोधाभासी प्रवृत्तियों के बीच आवाजाही करती है।
4. राजनैतिक रूझान : मध्यवर्ग, शासन में अक्सर स्थिरता और राष्ट्रभक्ति की बात करता है। क्योंकि उसे लगता है कि शासन में स्थिरता उसे आर्थिक सुरक्षा प्रदान करेगा और उसकी आकांक्षाओं को पूरा करने में मदद करेगा।

हिंदी कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना का विकास

कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना के विकास को हम निम्नलिखित चरणों में बाँट सकते हैं :

1. प्रेमचंद पूर्व युग:

हिंदी कथा साहित्य का आरंभ तो सन 1800 ई से ही माना जाता है लेकिन शुरू के कथाकारों ने अपनी कहानियों में पौराणिक आख्यानों को आधार बनाकर कहानियां लिखीं। उसके बाद तिलस्मी, जासूसी जैसे मनोरंजन प्रधान कहानियों को जगह मिली। कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ का निरूपण बहुत बाद में शुरू हुआ। प्रेमचंद के पूर्ववर्ती कुछ कथाकारों की कहानियों में सामाजिक यथार्थ जगह पाने लगा था। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने मध्यवर्ग की विवाह तथा प्रेम की समस्या का चित्रण 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1926) तथा 'अधखिला फूल' (1907) में किया। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' में अनमेल विवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया और'अधखिला फूल' में धर्म की महत्ता प्रतिपादन के साथ साथ प्रसंगवश धार्मिक अंधविश्वासों के दुष्परिणाम भी दिखाए गए। ब्रजनन्दन सहाय ने 'सौन्दर्योपासक' 'राधाकान्त', एवं 'अरण्यबाला' उपन्यास लिखे। 'राधाकान्त' और 'अरण्यबाला' दोनों रचनाओं में देश की आर्थिक विषमता का विस्तार से चित्रण किया गया है। इन उपन्यासों के पात्र पाश्चात्य संस्कृति का समर्थन करते हैं। नवीन शिक्षा और प्रगतिशील विचारों का समर्थन इस बात का द्योतक है कि प्रेमचन्द-पूर्ववर्ती उपन्यासों में मध्यवर्ग की चेतना जागरूक हो रही थी। आर्थिक दुर्दशा, बेकारी, स्त्री-शिक्षा तथा देश की राजनीतिक उथल-पुथल जैसे प्रश्नों को उपन्यासों में उठाया गया है।

मन्नन द्विवेदी कृत 'रामलाल' (1917) एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में एक जगह मनन द्विवेदी लिखते हैं कि जहां नारी कष्ट पाती हैं, वहां कल्याण संभव नहीं! 'रामलाल' एक नारी-केंद्रित उपन्यास है, जो स्त्री पात्रों की पीड़ा, आत्म-विवेक और विरोध की गहरी घटना पर आधारित है। इसमें शिक्षा, अपेक्षाएँ, शोषण और वैचारिक संघर्ष की रूप - रेखा स्पष्ट दिखाई देती है। यह न केवल तत्कालीन हिन्दी की समकालीन प्रवृत्तियों में प्रासंगिक था, बल्कि स्त्री अधिकार एवं जागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी है।

2. प्रेमचंद युग:

प्रेमचन्द के पहले ही हिंदी कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ को जगह मिलने लगी थी। लेकिन प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ के साथ साथ मध्यवर्गीय समाज के संघर्षों और द्वंद्व को अपनी कहानी का केंद्रीय तत्व बनाया। हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण और शहरी मध्यवर्ग के जीवन, उनके संघर्ष और नैतिक द्वंद्वों का जो चित्रण प्रेमचंद ने किया है, वह अन्यत्र दिखाई नहीं देता है। ' कफन' में घीसू—माधव भूख व गरीबी की कल्पनाशील ज़िंदगी जीते हैं, जहाँ आलस्य, निकम्मापन, झूठ का पुलिन्दा सा उनका चरित्र मध्यवर्गीय पीड़ा की एक सच्ची तस्वीर पेश करता है।

मध्यवर्ग अक्सर अपनी छवि को बनाए रखने के लिए संघर्ष करता है। 'नमक का दरोगा' में नायक भ्रष्टाचार से दूर रहते हुए भी उपेक्षित रहता है, लेकिन उसका आत्मगौरव उसे झुकने नहीं देता। यह आदर्शवाद और यथार्थ के टकराव का प्रतिनिधित्व करता है।

'सवा सेर गेहूँ' तथा ' पूस की रात' जैसी कहानियों में किसानों और मध्यमवर्गीय पात्रों की आर्थिक असुरक्षा और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को मनोवैज्ञानिक गहराई से उकेरा गया है।

'गबन' में रमानाथ आर्थिक सीमाओं को पार करते हुए दिखता है, उसकी पत्नी जालपा की भौतिक सुखों की चाह उसे धोखाधड़ी पर ले आती है। यह साफ दर्शाता है कि मध्यमवर्ग का व्यक्ति अक्सर नैतिक दुविधाओं में फँस जाता है । 'निर्मला' में दहेज की परम्परा से उत्पन्न सामाजिक दबाव के कारण निर्मला की वैवाहिक और आत्मसम्मान से जुड़ी त्रासदी मध्यवर्गीय जीवन की विषमता दर्शाती है। निर्मला की नायिका पर मंडराते दहेज, वित्तीय बोझ और पारिवारिक अपेक्षाएँ, स्त्री- मध्यमवर्गीय चेतना की आत्मचेतना का सशक्त उदाहरण हैं। इसी तरह 'सेवासदन' में नारी पात्र, वर्गीय प्रतिबद्धता, आत्मसम्मान और सामाजिक सेवा को अपना रास्ता बनाती है, जिससे मध्यवर्गीय जीवन मूल्यों में बदलाव दिखाई देता है ।

3. **नई कहानी आंदोलन:**

1950 और 60 के दशक में उभरता 'नई कहानी आंदोलन' न केवल हिंदी कथा साहित्य में यथार्थ, आधुनिकता और मनोविश्लेषण की नई लहर था, बल्कि इसने मध्यवर्गीय चेतना को कथा-साहित्य के केंद्र में स्थापित किया। इस आंदोलन ने प्रेमचंदीय आदर्शवाद को छोड़कर समकालीन सामाजिक, आर्थिक, मानसिक और यौनिक समस्याओं को बारीकी से विश्लेषित करना आरंभ किया। 'नई कहानी' आंदोलन के तहत कथाकारों ने मध्यवर्गीय जीवन की मानसिक और भावनात्मक जटिलताओं को केंद्र में रखा। यह युग आत्मविश्लेषण, आंतरिक तनाव, स्त्री-पुरुष संबंध और सामाजिक बनावटीपन को लेकर अधिक सजग था।

नई कहानी में मध्यमवर्गीय पात्रों के आर्थिक संघर्ष, नौकरी की अनिश्चितता, गृहस्थ जीवन की जटिलता को पहली बार नायकत्व मिला। मोहन राकेश की 'आधे-अधूरे' में एक मध्यवर्गीय परिवार का बिखराव, ऊब, असंतोष और असुरक्षा दिखती है। वहीं राजेन्द्र यादव की 'सारा आकाश' में नवविवाहित युवा का पारिवारिक बोझ और आत्मसंदेह, शुद्ध मध्यवर्गीय संवेदना प्रदर्शित होती है।

नई कहानी में पात्रों का संघर्ष केवल बाहरी नहीं, आंतरिक और मानसिक भी है। मध्यवर्ग अब सामाजिक आदर्शों से नहीं, स्व के भीतर की द्वंद्वात्मकता से जूझता है। मन्नू भंडारी की 'एक इंच मुस्कान', 'यही सच है', और 'आँवला' जैसी कहानियाँ मध्यवर्गीय स्त्रियों की भावनात्मक अस्मिता, शिक्षा और सामाजिक बंदिशों का चित्रण करती हैं। स्त्रियाँ अब केवल 'पत्नी' या 'त्यागमयी माँ' नहीं, बल्कि सोचने-विचारने वाली व्यक्ति हैं।

स्वतंत्रता के बाद बदलते सामाजिक संदर्भ में मध्यवर्गीय व्यक्ति नैतिक असमंजस, पारिवारिक संकट और आत्महीनता से ग्रस्त है। कमलेश्वर की कहानियाँ , जैसे 'दिल्ली मेरी जान' सामाजिक विघटन के बीच अस्थिर मध्यवर्गीय मानसिकता को उभारती हैं।

नई कहानी के मध्यवर्गीय पात्र शहरों के भीड़ भरे एकांत में रहते हैं जहां संबंध टूटते हैं, संवाद मूक हो जाते हैं और आत्मा में शून्यता घर कर जाती है। यह बिम्ब उस नई मानसिकता का प्रतीक है, जहाँ मध्यवर्ग विकास के साथ-साथ आत्म-केन्द्रित और अवसादग्रस्त भी होता है।

4. समकालीन कथा साहित्य:

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना न केवल सामाजिक और आर्थिक यथार्थ को दर्शाती है, बल्कि नई जीवन स्थितियों, मूल्यों के विघटन, अस्मिता की तलाश, और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को भी प्रस्तुत करती है। यह चेतना अब केवल संघर्ष नहीं, बल्कि संशय, विकल्पहीनता और आत्मगोपन की स्थिति में भी अभिव्यक्त हो रही है।

आज का मध्यवर्गीय समाज भौतिकवाद और असंतोष के द्वंद्व में उलझा हुआ है, भौतिक सुविधाओं की दौड़ में शामिल है, सुविधाएं पा लेने के बाद भी आत्मिक रूप से असंतुष्ट है। उपभोक्तावादी संस्कृति, ईएमआई, निजी शिक्षा, करियर का दबाव जैसे विषय साहित्य में उभर कर आए हैं। उदय प्रकाश की कहानियाँ 'तिरिछ' और 'मोहनदास' में भ्रष्ट व्यवस्था से टकराता मध्यवर्गीय व्यक्ति नजर आता है।

"तिरिछ" (1990 में प्रकाशित) उनकी प्रसिद्ध कहानी है, जो अविश्वसनीय रूप से मार्मिक और सामाजिक यथार्थ से ओत-प्रोत है। यह एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक हॉरर शैली में बुनी गई कथा है, जिसमें एक गाँव में रचे - बसे पिता की शहरी जीवन की मानवीय संवेदनहीनता के साथ मुठभेड़ चित्रित की गई है। उदय प्रकाश की दूसरी लंबी कहानी "मोहनदास" (2006) मध्यवर्गीय और दलित चेतना पर गहन चोट करती है। यह भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, भ्रष्टाचार, और शोषण की क्रूर सच्चाई को उजागर करती है।

मन्नू भंडारी की कहानी "यही सच है" मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री की भावनात्मक स्वतंत्रता, और संबंधों की ईमानदारी पर केंद्रित है। इसमें एक ऐसी स्त्री की मानसिक दुनिया को अभिव्यक्त किया गया है, जो अतीत और वर्तमान के द्वंद्व से जूझती है और अंततः अपनी सचाई को स्वीकार करती है।

निजी क्षेत्र, कॉन्ट्रैक्ट जॉब, बेरोज़गारी, आत्महत्या की प्रवृत्ति, आज के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चिंता के केंद्र में हैं। अनिल यादव, प्रभात रंजन, मनीषा कुलश्रेष्ठ की रचनाएँ इस अस्थिर मानसिकता को उजागर करती हैं। समकालीन महिला लेखिकाओं (जैसे मनीषा कुलश्रेष्ठ, अनामिका, नीलिमा चौहान) की कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय नारी की सेक्सुअल, भावनात्मक और सामाजिक स्वतंत्रता की खोज दिखती है। स्त्री अब सिर्फ पीड़िता नहीं, प्रश्नकर्त्री और निर्णायक भी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी कथा साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना एक गतिशील और सशक्त प्रवृत्ति के रूप में उभरी है। यह चेतना समाज के उस वर्ग की आवाज़ बन गई है जो न तो पूर्णतः शोषित है, न ही प्रभुत्वशाली – परंतु जो संघर्षशील, मूल्यनिष्ठ, और परिवर्तनशील है। आज के समय में भी, मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं और द्वंद्वों को समझने के लिए हिंदी कथा साहित्य एक प्रभावशाली साधन बना हुआ है।

संदर्भ सूची:

1. पवन कुमार वर्मा : भारत में मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, राजकमल प्रकाशन।
2. डॉ बी बी मिश्र: द इंडियन मिडल क्लास, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड।
3. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : ठेठ हिन्दी का ठाठ
4. प्रेमचंद : मानसरोवर
5. मोहन राकेश : आधे-अधूरे
6. मन्नू भंडारी: यही सच है

7. उदयप्रकाश की कहानी: मोहनदास
8. उदयप्रकाश : तिरिछ